



मुनाफे का सौदा है जंगली गेंदे की खेती

प्रियंका सूर्यवंशी*, दिपेन्द्र कुमार** और अर्जिता पुनेठा**

वनस्पति जगत में *टेजटस माइन्डूटा* के नाम से पहचान रखने वाले जंगली गेंदे की खेती किसानों के लिए वरदान साबित हो सकती है। जंगली गेंदे का उत्पादन मुख्यतः दक्षिण अफ्रीका, ब्राजील और ऑस्ट्रेलिया में किया जाता है। भारत में उत्तर भारत के पहाड़ी व मैदानी क्षेत्रों-हिमाचल प्रदेश, जम्मू एवं कश्मीर और उत्तर प्रदेश में इसकी खेती व्यावसायिक स्तर पर होने लगी है। देश में इसके तेल का अनुमानित कुल उत्पादन 5 टन है। जंगली गेंदे का प्रसाधन उद्योग में भारी मात्रा में प्रयोग किया जाता है। इसके सुगंधित तेल को परफ्यूम में *टेजीटी* के नाम से उपयोग किया जाता है। तम्बाकू उद्योग में उपयोग के साथ-साथ सर्दी-जुकाम, श्वास व पेट सम्बंधित समस्याओं को ठीक करने में जंगली गेंदा लाभकारी है।

जंगली गेंदे के फूल व पत्तों में मुख्यतः सुगंधित तेल पाया जाता है। इसका उपयोग इत्र उद्योग तथा कीटनाशक दवाइयाँ बनाने में किया जाता है। इसके अलावा जंगली गेंदे की खेती किसान अपनी फसल के आसपास बतौर सुरक्षा कवच कर सकते हैं, क्योंकि इसकी गंध से जंगली पशु दूसरी फसलों को भी नुकसान नहीं पहुँचाते हैं।

भूमि एवं जलवायु

जंगली गेंदे को शीतोष्ण एवं समशीतोष्ण

जलवायु की आवश्यकता होती है। इसको मैदानी व पहाड़ी क्षेत्रों के निचले भागों में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। बीजों को जमाव के लिए कम तापमान और पौधों की बढ़वार के लिए लम्बे गर्मी के दिनों की आवश्यकता होती है। बलुई दोमट या दोमट भूमि जिसका पी.एच. मान 4.5-7.5 हो और जिसमें कार्बनिक पदार्थों की प्रचुर मात्रा उपलब्ध हो, जंगली गेंदे की खेती के लिए अच्छी होती है। जल निकास का उचित प्रबन्ध होना आवश्यक है।

प्रजाति-वन फूल

नर्सरी एवं बीज बुआई- उत्तर भारत के मैदानी भागों में इसकी खेती, बीज की सीधे

पैदावार

वन-फूल, सीमैप द्वारा विकसित की गई एक उन्नत किस्म है। इसकी खेती कर 300-500 क्विंटल प्रति हैक्टर शाकीय भाग (हर्ब) प्राप्त होता है, जिसमें 40-50 किग्रा. तेल प्राप्त होता है। हर्ब का तुरन्त आसवन कर लेना चाहिए।

बुआई अक्टूबर माह में की जा सकती है तथा पहाड़ी क्षेत्रों में इसकी नर्सरी मार्च से अप्रैल माह में तैयार की जाती है। जब पौधे 10-15 सेंमी. लम्बे हो जाएं तो रोपण कर देना चाहिए। सीधे बीजों से बुआई करने के लिए लगभग 2 किग्रा. प्रति हैक्टर बीज की आवश्यकता होती है। इसमें थोड़ी मिट्टी मिलाकर पंक्तियों में छिड़ककर बो सकते हैं। रोपण द्वारा फसल लगाने के लिए लगभग 750 ग्रा. बीज प्रति हैक्टर की आवश्यकता होती है। कतार से कतार की दूरी 45 सेंमी. और पौधे से पौधे की दूरी 30 सेंमी. रखते हैं। रोपाई के तुरन्त बाद हल्की सिंचाई करना आवश्यक है।

शुद्ध लाभ

जंगली गेंदे की फसल के उत्पादन में करीब 3500/- रुपये प्रति हैक्टर का खर्च आता है और फसल को बेचकर करीब 75000/- रुपये का शुद्ध लाभ हो सकता है।

सिंचाई-मैदानी क्षेत्रों में 3-4 सिंचाइयों की प्रायः आवश्यकता होती है तथा पहाड़ी क्षेत्रों में जंगली गेंदे की खेती वर्षा आधारित होती है।

खाद व उर्वरक-खेत की तैयारी के समय अन्तिम जुताई पर 10-12 टन प्रति हैक्टर सड़ी हुई गोबर की खाद मिलानी चाहिए। अच्छी पैदावार के लिए 100 किग्रा. नाइट्रोजन, 60 किग्रा. फॉस्फोरस तथा 40 किग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर की दर से देनी चाहिए। नाइट्रोजन दो बराबर भागों में पहली निराई (30-40 दिन) पर तथा दोबारा उसके एक माह बाद देनी चाहिए।

फसल की कटाई-मैदानी भागों में अक्टूबर माह में लगाई गई फसल मार्च अन्त से अप्रैल मध्य में तथा पहाड़ी क्षेत्रों में जून-जुलाई में लगाई गई फसल सितम्बर-अक्टूबर में कटाई के लिए तैयार हो जाती है। भूमि से लगभग 30 सेंमी. ऊपर हसिया से पौधों को काटना चाहिए।

*सी.एस.आई.आर.-केन्द्रीय औषधीय एवं सगंध पौधा संस्थान, लखनऊ; **सी.एस.आई.आर.-केन्द्रीय औषधीय एवं सगंध पौधा संस्थान, अनुसंधान केन्द्र, पन्तनगर